तात्पर्य

भगवान् श्रीकृष्ण, जो जीवमात्र के अन्तर्यामी हैं, अर्जुन की मनःस्थिति को समझ गए। इस संदर्भ में **हृषीकेश** शब्द उनकी सर्वज्ञता का सूचक है तथा अर्जुन के लिए प्रयुक्त **पार्थ** शब्द भी इसी प्रकार सारगर्भित है। श्रीकृष्ण अपने सखा को यह सूचित करना चाहते हैं कि उन्होंने उसका सारथ्य इसीलिए स्वीकार किया, कि वह उनकी बुआ कुन्ती (पृथा) का पुत्र है। परन्तु 'कौरवों का अवलोकन कर'—यह कहने से श्रीकृष्ण का क्या अभिप्राय है? क्या अर्जुन युद्ध से उपरत हो जाना चाहता है? श्रीकृष्ण को बुआ कुन्ती के पुत्र से ऐसी आशा नहीं थी। इस विधि से मित्रोचित परिहास में भगवान् ने अर्जुन की मनःस्थिति की पूर्वसूचना दी है।

तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान् ।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा ।
श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि ।।२६।।

तत्र=वहाँ; **अपश्यत्**=देखा; **स्थितान्**=स्थित हुए; **पार्थः**=अर्जुन ने; **पितॄन्**=पितृ-तुल्य गुरुजनों; **अथ**=तथा; **पितामहान्**=पितामहों को; **आचार्यान्**=आचार्यों को; **मातुलान्**=मामाओं को; **भ्रातॄन्**=भाइयों को; **पुत्रान्**=पुत्रों को; **पौत्रान्**=पौत्रों को; **सखीन्**=सखाओं को; **तथा**=और; **श्वशुरान्**=श्वसुरों को; **सुहृदः**=**च** और हितैषियों को; **एव**=भी; **सेनयोः**=सेनाओं में; **उभयोः अपि**=दोनों ही।

अनुवाद

अर्जुन ने उन दोनों दलों की सेनाओं में खड़े हुए पितृतुल्य गुरुजनों, पितामहों, आचार्यों, मामाओं, भाइयों, पौत्रों, मित्रों, श्वसुरों और सुहृदों को भी देखा।।२६।।

तात्पर्य

अर्जुन को युद्धभूमि में सभी सम्बन्धियों का दर्शन हुआ। उसने पितृतुल्य भूरिश्रवा आदि, पितामह भीष्म एवं सोमदत्त, आचार्य द्रोण तथा कृप, शल्य और शकुनी आदि मामाओं दुर्योधन आदि भाइयों, लक्ष्मण आदि पुत्रों, अश्वत्थामा आदि मित्रों तथा कृतवर्मा आदि सुहृदों को देखा। उसने उन संकुलों को भी देखा जिनमें उसके बहुत से मित्र थे।

तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान् ।
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत् ।।२७।।

तान्=उन; **समीक्ष्य**=देखकर; **सः**=वह; **कौन्तेयः**=कुन्तीपुत्र अर्जुन; **सर्वान्**=सम्पूर्ण; **बन्धून्**=बन्धुओं को; **अवस्थितान्**=खड़े हुए; **कृपया**=दया से; **परया**=अत्यन्त; **आविष्टः**=अभिभूत होकर; **विषीदन्**=शोक करता हुआ; **इदम्**=इस प्रकार; **अब्रवीत्**=बोला।